दैनिक भास्कर

22-Dec-2019
Page 2

Cityभास्कर

CITY ACTIVITY

पटना, रविवार 22 दिसंबर , 2019 . 02

सिद्धार्थ ने ट्राइबल्स से सीखी स्टोरी टेलिंग, बच्चों को कहानी सुना कर रहे खुश

20 साल स्टोरी लिखने और एनिमेटेड फिल्में बनाने के बाद चुना नया सफर, अब विभिन्न शहरों में जाकर सुनाते हैं कहानियां

मिनी रिपोर्टर, पटना

सिद्धार्थ मस्करी शनिवार को कैनवास में अपनी कहानी द फिकल जार एडवेंचर सुनाने आए थे। वो मुंबई के हैं और एक फेमस राइटर, स्टोरी टेलर और एनिमेटेड फिल्म मेकर हैं। सिद्धार्थ ने दो साल से ट्राइबल्स से इंस्पायर होकर स्टोरी टेलिंग का काम शुरू किया है। उन्होंने विभिन्न शहरों में अपने सेशन आयोजित कर लोगों को कहानियां सुनाई हैं। उनके लिए यह एक तरीका है खुशियां बांटने का। इस मौके पर डॉ. इम्तियाज अंजुम, फोटोग्राफर सुमंत श्रीवास्तव, दीपक साहू, अलका दास, विनय कुमार और अन्य मौजूद थे।

कितने लोग हैं यहां जिनके कोई सपने नहीं..... किसी ने हाथ नहीं उठाया..... सिद्धार्थ मस्करी कहते हैं अच्छा तो सबका सपना है। तब तो अपने लिए ताली बजानी बनती है। तो मैं जो आपको सुनाने जा रहा हूं वो है सपनों की कहानी... जहां इंसानियत की खोज हो रही है। ऐसी दुनिया की जहां गरीब अमीर को शोषित करते हैं... जहां लोगों पर विश्वास हो नहीं पाता। मुंबई का एक छोटा सा शहर जहां 12 साल का एक लड़का रघु रहता है। वो यूपी से भाग कर आया है, क्योंकि उसका एक सपना है कि वह एक मशहूर डिटेक्टिव बने। उसे मिलते हैं रमेश चाचा जो चाय बनाते हैं। वहीं पर उसे चाय डिलिवरी करने की नौकरी मिली और उन्होंने उसे अपने पास रखा। यहां उसकी दोस्ती 60 साल के एक गैरेज ओनर से होती है। वह अपने गराज में नए-नए आविष्कार करते रहते हैं। इसके बाद सिद्धार्थ ने सुनाया कैसे रघु को अपने जीवन का पहला केस मिलता है और कैसे वो अपने 60 साल के दोस्त के साथ स्कूटर की सवारी पर जाता है।

INTERVIEW पूरी रात रहा बेचैन, सुबह शुरू किया नया सफर

मुंबई में 20 वर्षों से सेटल थे? फिर अचानक कहानियां सुनाने का सफर क्यों?

मेरी लाइफ एक सर्कल के अराउंड घूम रही थी। कहानियां लिखता था। एनिमेटेड फिल्में बनाता था, ठीक-ठाक कमाता था। लेकिन लाइफ में पर्पस नहीं था। एक दिन जब मेरे एक गुरु ने पूछा तुम्हारा विजन क्या है? मैं ब्लैंक रह गया। मुझे नींद नहीं आई रात भर, मैं रिजिलेंस था। तब मुझे लगा मुझे खुशियां बांटनी हैं। अपनी कहानियों के सहारे।

कहां-कहां गए हैं आप कहानियां सुनाने, बिहार से क्या कनेक्शन है?

बिहार से अरे मैं तो बिहार का दामाद हूं। मेरी पत्नी स्मृति पटना की है। मैंने दो साल में 11 राज्यों में अपने सेशन आयोजित किए हैं।

कहां से मिली प्रेरणा? कितना मजा आता है यह काम करने में?

मुझे ये प्रेरणा मिली ट्राइबल्स से। ये तरीका ट्राइबल्स का है। स्टोरी सुनाने का, स्टोरी को जीने का और नई स्टोरी बनाने का। इसे करने से मुझे अंदर से खुशी मिलती है।

क्या लगता है आज के बच्चे कहानी सुनना चाहते हैं?

बच्चे सबसे बड़े कहानी टेलर होते हैं और सभी के अंदर के एक बच्चा होता है। जो कहानियां सुनना और सुनना चाहता है। लेकिन आज हम अपने बच्चों की क्यूरियोसिटी को हम खुद मार देते हैं। वो दीवारों पर ड्राइंग करना चाहते हैं लेकिन हम उन्हें एक पेपर देकर रिस्ट्रिक्ट कर देते हैं। उनकी क्यूरियोसिटी तो यहीं खत्म हो जाती है।

आप विभिन्न शहरों में अपना वर्कशॉप और सेंटर चलाते हैं, पटना के लिए कोई इरादा

मेरे सेंटर कुछ शहरों में चलते हैं। जहां बच्चों और युवाओं को स्टोरी टेलिंग और एनिमेशन से जुड़ी ट्रेनिंग दी जाती है। वह एक अलग सा प्लेटफॉर्म होता है। पटना में भी मैं शुरू करना चाहता हूं। लेकिन अच्छे कोलैबोरेटर्स की तलाश है। इनकी रीच कम्युनिटी में हो और हम इसको आगे बढ़ा सकें।

बातचीत-श्रेया शर्मा